मृत्यु के बाद जीवन

मनुष्य ने जीवन के भिन्न भिन्न रूप देखे हैं, जीवन जीने के प्रकार उसने बदले है, कभी उसने पत्थरों के काल में निवास किया, और कभी पड़ के छालों से बने घरो में आवास किया, कभी घोडागाड़ी चला कर जीवन को गती दी, तो विमान एवं राकेट के इस युग में अपने जीवन को गतीमान किया।

जीवन के इस चक्र में जिस बात का उस ने कभी खंडन नहीं किया वह इस जीवन की समाप्ति यानी मृत्यु है, हर व्यक्ति इस बात से अच्छी तरह परिचित है कि उसे मृत्यु आयेगी, लेकिन क्या इस मृत्यु के बाद भी जीवन है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो रहस्यमय तो है ही साथ में इस प्रश्न ने मानवजाती को संभ्रम मे भी डाले हुए है।

"मृत्यु के बाद जीवन" पर विश्वास इस्लाम में अनिवार्य

"मृत्यु के बाद जीवन" इस्लाम का अविभाज्य घटक है, यानी एक आदमी अगर मृत्यु के बाद के जीवन पर विश्वास नहीं करता तो वह मुसलमान ही नहीं है, एक मुसलमान इस बात पर विश्वास करता है कि मृत्यु के बाद जीवन, इस जीवन में किए गए कर्मों के भुगतान के लिए है, इस जीवन में किया गया हर कर्म का बदला उस जीवन में मिलने वाला है, जितना अच्छा व बडा कर्म होगा उतना अच्छा व बडा इनाम मिलेगा, और जितना बुरा एवं बडा दुष्कर्म होगा उतना बुरा एवं कठोर दंड मिलेगा।
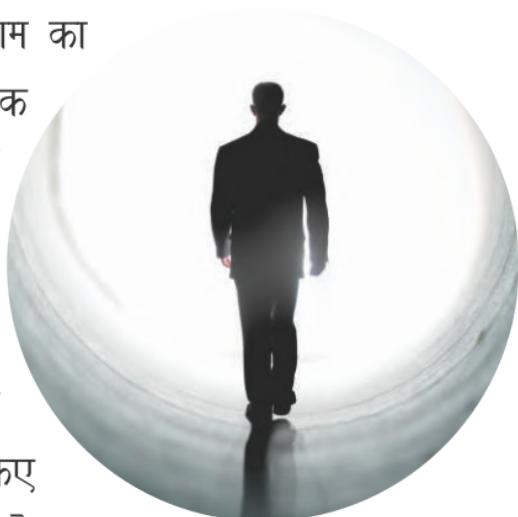
"मृत्यु के बाद जीवन" पर संदेह

अरब के लोग "मृत्यु के बाद के जीवन" पर विश्वास नहीं करते थे, जब इस्लाम ने "मृत्यु के बाद जीवन" के सिद्धांत को इन लोगों के सामने रखा तो अरब के लोगों ने यह संदेह उपस्तिथ किया की हम ने तो यही देखा हैं की मुत्यु के बाद इंसान का मांस गल जाता है, तो फिर मृत्यु के बाद जीवन कैसे ? यानी जिस मांस को कीड़े खा गये या किसी मनुष्य का संहार किसी प्राणी जैसे शेर, चीता ने किया और मांस खाकर हजम कर दिया तो किस प्रकार इंसान का वह मांस वापस आयेगा ?

अरब के यह लोग सृष्टि निर्माता को मानते थे लेकिन इन का यह तर्क दर्शाता है की उन लोगों ने सृष्टि निर्माता को पहचान ने में कितनी बडी भूल की थी, जिस ने इस सृष्टी का निर्माण किया उसी ने तो यह मांस खाने वाले शेर, चीते बानायें, कीड़े मकोड़े

बानयें, यह उसी का नियम है की कुछ प्राणी मांस खायेगें और कुछ प्राणी घास खायेंगे फिर अगर वह चाहे तो क्या ऐसा नहीं हो सकता की मांस खाने वाले घास खायें और घास खाने वाले मांस ? हो सकता है, निश्चित रूप से हो सकता है, इसलिए की वह हर काम में सक्षम है, कोई ऐसी चीज़ नहीं जो वह कर नहीं सकता, कोई भी कार्य उस के नियंत्रण से बाहर नहीं, लिहाज़ा वह इस बात में सक्षम है की जिन प्राणियों ने मांस खाया वह प्राणी फिर से उस मांस को उगल दें, जिस आग ने मांस को जलाया है वह आग फिर से उस मांस को निकाल दे । यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर सक्षम है। (सुरह बकरा ः २०)

मृत्यु के बाद जीवन इस संदेह पर इस्लाम के उत्तर . .

१ . इंसान को पहली बार किस ने जीवन दिया ः

इंसान जन्म से पहले क्या था ? जन्म से पहले तो उस का कोई अंश ही ना था तो मांस और हडडीयों का प्रश्न ही उपस्तिथ

नहीं होता। निर्माता ने उसे जीवन दिया जब वह कुछ नहीं था, मरने के बाद मांस चला गया लेकिन हडडीयां तो बाक़ी रहती हैं, या जली हुई राख तो होती है, अर्थात प्रश्न यह है की जिस रचयिता ने उसे कुछ ना होने के बावजूद जीवन दिया तो फिर मरने के बाद कुछ तो है, फिर वह उसे पुन: जीवन क्यों नहीं दे? सकता ? कुछ ना होने पर जीवन में लाना कठिन है या कुछ होने पर जीवन में लाना कठिन है

और वही है जिस ने पहली बार जीवन दिया फिर वही पुन: रचना करेगा और पुनः रचना करना (पहली बार जीवन देने से ज़्यादा) आसान है। (सुरह रूम ः २७)

जैसे हम ने पहली बार जीवन दिया वैसे हम पुन: रचना करेंगे, यह वचन है हम पर, और हम इसे करने ही वाले हैं। (सुरह अम्बिया ः १०४)

वो **निश्चित** ही कहेंगे कौन हमें पुन: जीवन देगा ? आप कहिऐ ः वह जिस ने तुम्हें पहली बार जीवन दिया। (सुरह इस्रा ः ५१)

इसलिए जो व्यक्ति पुन: जीवन मिलने का इंकार करता है वह ऐसा है की उस ने अपने पहले जीवन को भुला दिया। क्या इंसान

ने विचार नहीं किया की हम ने उसे वीर्य से पैदा किया हैं जो वह झगडालू बन रहा है, हमारे लिए उदाहरण पेश किया और खुद की पैदाइश को भुल गया, कहने लगा कौन इन विघटित हडडीयों को पुन: जीवन देगा ? आप कह दीजिऐ वह उन्हें जीवन देगा, जिस ने उन हडडीयों को पहली बार अस्तित्व दिया था और वह हर रचना को भली भांती जानता है । (सुरह यासीन ः ७७ से ७९)

२. सृष्टीकर्ता ने ऐसी चीज़ो की रचना की है जो मानव की रचना के मुकाबले विशाल है

सृष्टीकर्ता ने ऐसी चीज़ो की रचना की है जिन्हें निर्माण करना इंसानों की निर्मिती से ज़्यादा कठिन है, जब रचयिता ने उन्हें निर्माण किया तो इंसानों को पुन: जीवन देना उस के लिए क्या कठिन है ?

आस्मानों व ज़मीन को अस्तितव देना इन्सानों को पैदा करने से ज़्यादा महान है लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते । (सुरह ग़ाफिर ः ५७)

और क्या जिस ने आस्मानों और ज़मीन को अस्तित्व दिया वह इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता की इन जैसे इंसानों को जीवन दे ? क्यों नहीं, वह तो हर तरह का जीवन देने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (सुरह यासीन ः ८१)

और क्या उन लोगों ने (पुन ः जीवन का खंडण करने वालों ने) नहीं देखा की अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों व ज़मीन को अस्तित्व दिया और उन्हें अस्तित्व देने में किसी भी तरह, की दुर्ब लता उस में न थी, क्या वह इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता की मरे हुओ को पुन: जीवन दे ? क्यों नहीं, वह तो हर चीज़ पर सक्षम है । (सुरह अहक़ाफ ः ३३)

३. निर्जीव धर्ती में जीवन का संचार

जब बारिश होती है तो निर्जीव पडी इस धर्ती पर जीवन का संचार होता है, घास फूस उग आती है, फूल खिल उठते हैं, खेतीयों में अनाज उग आता है, धर्ती का हर हिस्सा तरल एवं सजीव नज़र आता है, हर प्राणी के अंदर जीवन की एक उमंग होती है जिस तरह इस निर्जीव पडी धर्ती को रचयिता पुनः जीवन देता है तो फिर वह इंसान को पुनः जीवन क्यों नहीं देगा ? और उसी की नशानियों में से है की तुम देखते हो ज़मीन निस्तब्ध होती है, फिर जब हम उस पर वर्षा लाते हैं तो थरथराती है, उभर आती है, जिस ने उसे जिंदगी दी वही मुर्दो को भी जीवन देगा, वह हर चीज़ करने का सामर्थ्य रखता है । (सुरह फुस्सिलत ः ३९)

वह मरी पडी ज़मीन को पुन: जीवित करता है, इसी तरह तुम पुन: जीवित किये जाओगे । (सुरह रूम ः **१९**)

और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली हवायें भेजता है, यहां तक की जब वह हवायें बारिश भरे बादलों को उठाती हैं तो हम उन्हें मरी पड़ी धर्ती की तरफ खींच ले जाते हैं, उन से पानी बरसाते हैं, इस पानी से हम हर क़िस्म के फल उगाते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को भी जीवित करेंगे ताकि तुम नसीहत हासिल करो । (सुरह आराफ ः **५७**)

४. कुछ लोगों को इस विश्व में पुन: जीवन मिला है

कुछ इंसानों को अल्लाह ने मृत्यु के बाद जीवन दिया है, जब इन लोगों को अल्लाह ने मुत्यु के बाद जीवन दिया तो वह तमाम मानवजाती को मुत्यु के बाद जीवन क्यों नहीं देगा ??? और याद करो (यहोदियों) जब तुम ने एक मनुष्य की हत्या की
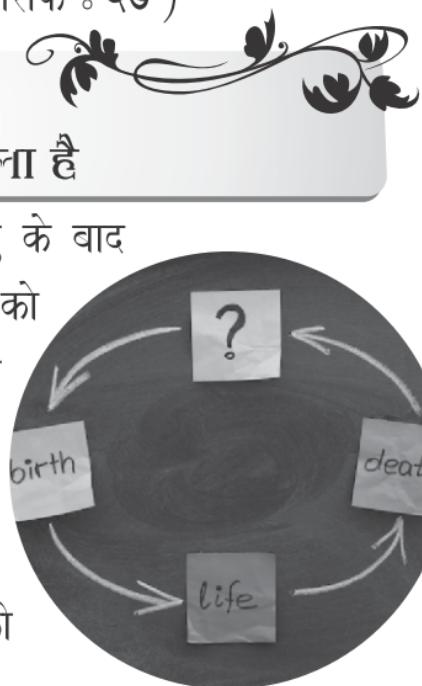
थी फिर तुम (हत्यारा कौन है ? पर) मतभेद करने लगे और अल्लाह प्रकट करने वाल था जिसे तुम छिपा रहे थे, इसीलिए हम ने कहा इस का कुछ हिस्सा उस मृत पर मारो (ऐसा करने पर वह जीवित हुआ और बतलाया की उस की किस ने हत्या की है) इसी तरह अल्लाह मुर्दों को जीवन देगा और तुम्हें अपनी नशानियां दिखायेगा ताकी तुम समझो । (सुरह बक़रा ः **७२-७३**)

क्या तुने उन लोगों पर ग़ौर नहीं किया जो मृत्यु के भय से घर से निकले, वे हज़ारों की संख्या में थे अल्लाह ने उन से कहा मर जाओ (वे मर गये) फिर अल्लाह ने उन्हें पुन: जीवित किया । (सुरह बक़रा ः **२४३**)

उस मानव की तरह जो एक क़सबे से गुज़रा जो अपनी छत के बल औंधा पडा था (वहां के घर छत के बल उलट गये थे) उस ने कहा ः अल्लाह कैसे इस क़सबे को मौत के बाद पुन: जीवन देगा ? अल्लाह ने उसे सौ

साल मृत रखा और फिर पुन: जीवन दिया, और उस से पुछा तु कितने दिन इस हालत में था ? उस ने कहा एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा, अल्लाह ने कहा ः बल्कि तु सौ साल तक इस हालत में था, अपने खाने पीने को देख वो खराब (सड़ा) नहीं हुआ और तेरे गदहे को देख, और हम तुझे लोगों के लिए नशानी बनायेंगे, उन हडिडयों को देख, किस तरह हम उन्हें जोड़ते हैं, फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं, जब उस पर स्पष्ट होगया तो कहने लगा मैं जानता हूँ की अल्लाह हर चीज़ पर सक्षम है। (सुरह बक़रा ः २५९)

कुरआन में इन घटनाओं को इसलिए बताया गया की यह घटनायें यहुद और इसाइयों में प्रचलित थीं, इन घटनाओं को वे जानते थे, जब यह घटनायें हुयी हैं और इसी विश्व में मौत के बाद फिर जीवन देखा गया है तो फिर मौत के बाद जीवन का कैसे इंकार किया जा सकता है।

५. अच्छों को अच्छाई का और दुष्ट को दुष्टता का बदला कहां मिलेगा?

संसार में अच्छे लोग होते हैं, दुष्ट व पापी लोग भी होते हैं, फिर अगर मरने के बाद कोई जीवन नहीं तो इन अच्छे लोगों को उन की अच्छाई का पुरस्कार और इन दुष्ट व पापी लोगों को दंड एवं सजा कहां मिलेगी ?

कभी एक अत्याचारी अत्याचार करता है, बहुत से लोग उस के अत्याचार से पीड़ित होते हैं लेकिन उस के भय से उस के विरूध्द कोई नहीं खडा होता, वह अत्याचारी दनदनाता फिरता है, लेकिन उसे रोकने वाला कोई नहीं होता, और अगर उसे पकड़ भी लिया जाये तो अपने पैसे और डर के बल बूते पर वह सबूत और गवाहों का ऐसा हेर फेर करता है की सज़ा एवं दंड से बच जाता है, अब ज़रा विचार कीजिये अगर मरने के बाद जीवन नहीं है तो फिर इस अत्याचारी का क्या ? कभी उसे उस के पापों की

सज़ा मिलेगी या नहीं ?

कभी एक अत्याचारी अत्याचार तो करता है लेकिन न्यायलय उसे छोड देता है इसलिए की उसे सज़ा देने के लिए कोई आधार या सबूत नहीं होता, लोग जानते हैं इस ने पाप किया है लेकिन सबूत ना होने पर उसका कुछ नहीं होता, अब बताईये अगर मौत के बाद जीवन हि नहीं है तो इस अत्याचारी को उस के पाप की सज़ा कहां मिलेगी ? जिन पर उस ने अत्याचार किया उन के साथ कौन इंसाफ करेगा ? इस विश्व के न्यायलय उसे दंड तो देना चाहते हैं लेकिन इस के लिए सबूत चाहिए जो है नहीं, अगर मौत के बाद जीवन नहीं तो फिर इस के पाप की कोई सज़ा नहीं।

कभी अत्याचार होता है लेकिन ना कभी अत्याचार का किसी को पता चलता है ना अत्याचारी का, ऐसा इसलिए होता है की जिस पर अत्याचार हुआ वह समाज के डर से या किसी और कारण अत्याचार की रिपोर्ट ही नहीं करता, परिणामस्वरूप उस

अत्याचार का पता किसी और को नहीं होता, ज़रा विचार कीजिये ऐसे कितने अत्याचार होंगे जो दुनिया के सामने कभी आयें ही नहीं, अब बताईये की इन अत्याचारों का क्या ? वह कौनसी जगह होगी जहां इन अत्याचारों का हिसाब हो, दुर्बल को न्याय मिले और दुष्ट को दंड ?

कभी ऐसा होता है की अत्याचार का पता तो होता है लेकिन अत्याचारी कभी पकड़ा ही नहीं जाता इसलिए के यह पता ही नहीं चल पाता की यह अत्याचार किस ने किया, ऐसे कई कैस होते हैं जो अनसुलझे होते हैं, जिन में गुनाहगार का पता कभी नहीं चल पाता इस का सब से बेहतरीन उदाहरण **Zodiac Killer** है जिस ने कई हत्याए कीं लेकिन आज तक पता नहीं चल पाया की यह **खूनी** कौन था, अब बताइये की इन पापीयों को इन के पापों की सज़ा कौन देगा ? अगर मौत के बाद जीवन है ही नहीं तो ऐसे दुष्ट तो बच निकल गये, फिर इंसाफ कहां हुआ ?

अब ज़रा दुसरी बात की तरफ हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, मान लीजिए कभी अत्याचारी पकड़ा जाता है लेकिन उस के पापों का घड़ा इतना भरा है, उस ने इतने पाप किये हैं की दुनिया की सारी सज़ाए उस के पापों के मुकाबले कम हैं, उदाहरणार्थ मान लिजीए की एक व्यक्ति ने बहुत सारी हत्याए कीं, आप उसे क्या सज़ा देंगे, ज़्यादा से ज़्यादा आप उसे सज़ाए मौत देंगे, लेकिन यह सज़ा तो उस की एक हत्या का दंड हुआ बाक़ी हत्याओं का क्या ? दुसरे विश्व युध्द में लगभग ६ करोड़ लोग मारे गये अगर आप इस युध्द के लिए "हिटलर" को ज़िम्मेदार मानते हैं तो उसे आप क्या सज़ा देंगे ?

इस के माने बग़ैर कोई चारा ही नहीं की ऐसे लोगों के पापों की सज़ा सृष्टीकर्ता ही दे सकता है, वह इस बात पर सक्षम है ऐसे लोगों को उन के पापों की सज़ा दे।

जब कभी उन की त्वचा जल जायेगी हम उन्हें दुसरी त्वचा से बदल देंगे ताकी अज़ाब का मज़ा चखे, यकिनन अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (सुरह निसा ः ५६)

रही बात उन लोगों की जो दुनिया में अपने पैसे के बलबूते पर बच जाते हैं तो मरने के बाद किस चीज़ से बचेंगे इसलिए यह पैसा वहां तो काम आयेगा नहीं, ना ही वह कोई हेर फेर कर पायेंगे, उन लोगों को भी अपने पापों का हिसाब देना होगा जिन का पाप कभी दुनियावालों को पता ही नहीं चला।

और उन के कर्मों की किताब रखी जायेगी, आप देखेंगे की अपराधी उस किताब में जो कुछ है (उन के दुष्ट कर्मों का ब्योरा) उस से डरे हुए होंगे और कहेंगे हमारी बबार्दी यह कैसी किताब है जिस ने हमारे ना छोटे दुष्ट कर्म छोडे ना बडे, सब को गिन लिया, और उन्होंने जो कर्म किये उसे सामने पायेंगे और आप का रब्ब किसी पर जुल्म नहीं करता। (सुरह कहफ़ ः ४९)

जिस ने सूक्ष्म मात्रा में भी कोई अच्छा काम किया तो वह उसे देख लेगा, और जिस ने सूक्ष्म मात्रा में भी कोई दुष्ट कर्म किया वह उसे देख लेगा। (सुरह ज़लज़ला ः ७-८)

रही बात गवाहों की तो सृष्टीकर्ता के समक्ष मनुष्य के दुष्टकर्म की गवाही उस मनुष्य के स्वयं हाथ पैर यहां तक की उस की त्वचा देगी। आज हम उन के मुख पर मोहर लगा देंगे, और जो कुछ कर्म वे करते थे उस के बारे में हम से उन के हाथ बात करेंगे, उन के पैर गवही देंगे।
(सुरह यासीन ः ६५)

वह अपनी त्वचा से कहेंगे तुम ने हमारे खिलाफ़ ग़वाही क्यों दी ? त्वचा बोल पड़ेगी हमें उस अल्लाह ने बोली सिखाई जिस ने हर चीज़ को बोली सिखाई। (सुरह फुस्सिलत ः २१)

जिन लोगों पर अत्याचार होता हैं वह भी कहीं ना कहीं यह मानते हैं की मृत्यु के बाद इस अत्याचारी से हमारे अत्याचार का बदला लिया जायेगा।

“मृत्यु के बाद जीवन” पर विश्वास के फायदे

“मृत्यु के बाद जीवन” पर विश्वास करने में ही मनुष्यजाती का हित है, जीवन जीने के लिए इस सत्य को अपनाये बग़ैर कोई चारा नहीं वरना जीवन लक्ष्यहीन बन जाता है, और लक्ष्यहीन जीवन उध्वस्त होने देर नहीं लगती, इस विश्वास को अपनाने में मानवजाती को बहुत सारे लाभ मिलते हैं जैसे ः

१. एक अच्छे समाज की निर्मिति

एक अच्छे समाज की निर्मिति के लिए समाज के लोगों का अच्छा होना ज़रूरी है, और अच्छे लोग वे होते हैं जो बुरे कार्य से बचते हैं, मृत्यु के बाद जीवन पर विश्वास और यह विश्वास की इस जीवन में किये गये कर्मों का हिसाब देना है एक मनुष्य के लिए बुरे कार्य करने में बाधा पैदा करता है, अगर हर मनुष्य का विश्वास मृत्यु के बाद जीवन पर इसी तरह होजाये तो इन मनुष्य से मिल कर जो समाज बनेगा वह एक अच्छा एवं शक्तिशाली समाज होगा ।

२. “मृत्यु के बाद जीवन” पर विश्वास नहीं करने वाले भी बुरे कार्य नहीं करते

“मृत्यु के बाद जीवन” पर विश्वास नहीं करने वाले भी बुरे कार्य नहीं करते, उस की वजह समाज है, यानी यह लोग सोचते हैं की अगर बुरा कार्य करें तो समाज में उन की इज़्ज़त ना होगी, समाज की सोच उन के संबंद में अच्छी ना होगी, लिहाज़ा वह बुरे कार्य करने से बचते हैं, लेकिन अगर इन लोगों को यह पता चल जाए की उन का बुरा कार्य लोगों के सामने नहीं आयेगा और समाज में उन की इज़्ज़त बाक़ी रहेगी तो वह बुरा काम करने से पीछे नहीं हटते इसलिए की जो डर उन्हें था वो समाप्त हो गया।

३. लोग़ बुरे कार्य क्यों करते हैं

क्या ऐसा ज़रूरी है की एक आदमी समाज के डर से ही बुरे कार्य से रूके, हो सकता एक आदमी को समाज से कोई फर्क़ नहीं पडता, लेकिन फिर भी वह बुरे कार्य नहीं करता ?

जी हां, ऐसा ज़रूरी नहीं, लेकिन मनुष्य की मानसिकता ऐसी है की उसे दुषकार्य का आकर्षन होता है, इसीलिए आप देखेंगे कुछ

लोग इस तरह के काम करने के लिए बाहर के देशों में जाते हैं जबकि उनकी छवि यहां बहुत अच्छी होती है, ऐसा क्यों होता है ? इसलिए की मानव के अंदर गलत काम करने की चेतना है, जब वह अपने समाज में होता है तो समाज के डर से वह इस उत्तेजना पर काबू पाता है, लेकिन जब ऐसी जगह जाता है जहां उसे जानने वाला कोई नहीं है, ना ही उस के गलत कार्य से वहां किसी को कोई फर्क़ पडता है तो आदमी के लिए गलत काम करने में कोई बाधा नहीं होती।

रही बात उन लोगों की जो समाज के डर से नहीं बल्कि वास्तविकता में अच्छे होते हैं और चाहे उन के कार्य का समाज को पता चले ना चले वे हर हाल में अच्छे कार्य ही करते हैं तो ऐसे लोग उंगलियों पर गिनने जितने हैं, और हम इन चंद लोगों की बात नहीं कर रहे हैं बल्कि हम आम मनुष्य की बात कर रहे हैं ।

४. "मृत्यु के बाद जीवन" पर विश्वास नहीं करने वालों का बुरे कार्य से रूकना और "मृत्यु के बाद जीवन" पर विश्वास करने वालों का बुरे कार्य से रूकना दोनों में फर्क है . .

अगर एक आदमी "मृत्यु के बाद जीवन" पर विश्वास करता है, और इस बात को मानता है की इस विश्व में जो कार्य भी वह करता है उसे विश्वनिर्माता देख रहा है, और इस जीवन के बाद उस जीवन में उसे, उस कार्य का भुगतान करना ही पडेगा, यह विश्वास उसे बुरे कार्य करने से रोकता है, इस आदमी में और उस आदमी में जो समाज के डर से बुरे कार्य नहीं करता बहुत बडा फर्क है, वह यह की जिसे समाज का भय है अगर यह भय किसी कारण ना रहे तो वह बुरे कार्य कर सकता है,

Allah is WATCHING YOU

लेकिन सृष्टीकर्ता का भय, मृत्यु के बाद इस कार्य का हिसाब देने का भय कभी समाप्त नहीं होता, या कभी हटता नहीं, यह ऐसा

भय है की इस आदमी को उस बुरे कार्य से भी बचाता है जिस के करते हुए उसे कोई नहीं देख रहा है, ना ही किसी को उसका पता चलेगा, लेकिन उसे पता है की यद्यपि कोई नहीं देख रहा, लेकिन विश्वनिर्माता देख रहा है, उस से कोई बात ढकी छुपी नहीं, उसे हर बात पता है लिहाज़ा वह ऐसे बुरे कार्य से भी रूक जाता है।
मान लीजिये की एक दुकानदार से कोई व्यक्ति कुछ खरीदता है, कुछ रूपये दुकानदार को वापस करने है, ग़लती से वह सौ रूपये ज़्यादा वापस करता है, मान लीजिये इस बात का पता दुकानदार को कभी नहीं लगेगा, ना ही उसे कभी याद आयेगा तो वह आदमी जो बुरे कार्य समाज के डर से नहीं करता शायद यह सौ रूपया ले ले, लेकिन जो यह विश्वास रखता है की उस का कोई कार्य सृष्टीकर्ता से छिपा नहीं, वह यह सौ रूपये लेने से पहले दस बार विचार करेगा की अगर यह सौ रूपया आज उस ने ले लिया तो मरने के बाद कल यह सौ रूपया उसे लैटाना होगा, यह डर उसे सौ रूपये वापस लोटाने पर विवश कर देगा।

५. अच्छे कर्मों के लिए चेतना

अगर एक आदमी "मृत्यु के बाद जीवन" पर **विश्वास** करता है, और यह **विश्वास** करता है की उस के अच्छे कार्य का बदला उसे

मिलेगा तो उस में अच्छे कार्य करने की उत्तेजना पैदा होगी, दुसरी निहायत अहम बात यह है की यह अच्छे काम सृष्टीकर्ता से पुरस्कार पाने के लिए होंगे, फिर उस के अच्छे कामों को दुनिया माने या ना माने, उसे अच्छे कार्य करने के लिए प्रोत्साहन दे या ना दे, इस से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पडेगा, वह हर हाल में अच्छे ही कार्य करेगा।

कुछ लोग अच्छे कार्य लोगों को दिखाने के लिए करते हैं इसीलिए वक़्त आने पर अपने अच्छे कर्म गिनाते हैं, अपने एहसानों को जतलाते हैं, अगर दुनिया उन के कार्य को स्वीकार नहीं करती या प्रोत्साहन नहीं देती तो वह अच्छे कार्य से रूक जाते है।

६. त्याग एवं बलिदान की भावना

अगर एक आदमी " मृत्यु के बाद जीवन " पर **विश्वास** नहीं करता, तो वह यह मानता है की जीवन, इसी विश्व का है, जिवन का जो मज़ा लेना है यहीं लेना है, इस के बाद जीवन मिलने वाला नहीं, जब यह विचार उस के मन में बैठ

जाता है तो वह इस दुनिया पर टूट पडता है, और अपनी सारी आशाओं की पूर्ति हर हाल में करना चाहता है, फिर वह दुसरों पर अत्याचार करेगा, पैसा पाने के चक्कर में लोगों की धन दौलत ग़लत त़रीक़े से हथिया लेगा, उन से ज़बरदस्ती पैसे वसूलेगा, उन की ज़मीनों पर ना जायज़ तौ़रपर कब्ज़ा करेगा, ग़लत़ व गैरकानूनी धंधे करेगा, ता़क़त़ पाने के लिए गुंडों को अपने निकट करेगा, समाज पर गुंडाराज स्थापित करेगा, एक रक्त –पिपासु की तरह समाज का खू़न चूसेगा तात्पर्य यह की ऐसा आदमी समाज के लिए समस्या बन जायेगा।

इस के विपरीत वह आदमी जो "मृत्यु के बाद जीवन" पर **विश्वास** करता है, इस विचार के साथ जीयेगा की यह जीवन एक दिन संपन्न होगा, धन दौलत, ताकत सब यहीं छोड़ कर जाना है, इस विचार से उस के अंदर त्याग व बलिदान की भावना उत्तपन्न होगी, वह पैसे के पीछे बेहाल जानवर की तरह नहीं दौड़ेगा, दुसरों की जरूरत पर अपनी ज़रूरत को त्याग देने की भावना उस में उत्पत्र होगी बल्कि कभी दुसरों की जरूरत पूर्ति में खुद नुकसान उठाएगा, "वह दुसरों को स्वयं से अधिक महत्व देते है । (सुरह हश्र ः ९) ऐसे आदमी के लिए किसी चीज़ का त्याग देना या बलिदान देना आसान होगा।

७. लक्ष्यहीन जीवन

जीवन में लक्ष्य होना बहुत ज़रूरी है, लक्ष्यहीन जीवन जानवरों के जीवन की तरह होता है, जिस तरह एक जानवर के जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता, जीवन उस के लिए सिर्फ " इच्छा पूर्ति " का नाम है, ठिक उसी तरह से लक्ष्यहीन मानव के लिए जीवन सिर्फ " इच्छा पूर्ती " का नाम रह जाता है, जब मनुष्य इस हाल में पहुंच जाये तो वह ना किसी और के कुछ काम आता है ना स्वयं की उसे कुछ फिक्र होती है, अगर कम उम्र नौजवान इस हाल में पहुंच जाये तो वह अपना जीवन शराब एवं दुसरी नशीली चीज़ों के आधीन करता है, फिर वह मौत से भी बदतर जीवन जीता है, ना वह एक अच्छा बेटा होता है ना अच्छा पती, बल्कि कभी तो शादी ही नहीं करता, ना मां बाप के कुछ काम आता है ना भाई बहनों के, बल्कि इन सब के लिए और पुरे समाज के लिए एक मानसिक तनाव का कारण बन जाता है, उसे जीवन जीने में

कोई रस नहीं होता, वह इस जीवन का अंत चाहता है और अंत में जीवन को समाप्त कर देता है।

ज़रा सोचिये इस का जीवन किस के क्या काम आया ? किस तरह एक मूल्यवान जीवन मूल्यहीन होकर समाप्त हुआ।

जो लोग जीवन का कोई लक्ष्य रखते हैं और हमेशा अपने लक्ष्य को अपने समक्ष रखते हैं और ऐसा कोई काम नहीं करते जो उन्हें उन के लक्ष्य से विचलित कर दे वे लोग अपने जिवन को एक अच्छा आकार देते हैं, लेकिन यहां एक दुसरी समस्या है अगर यह आदमी "मृत्यु के बाद जीवन" पर विश्वास नहीं करता तो स्वाभाविक है की उस के लक्ष्य का संबंध इसी विश्व से है, अब दो बाते होंगी या तो यह मनुष्य अपने लक्ष्य को पालेगा या नहीं पायेगा, अगर अपने लक्ष्य को पाले तो फिर जीवन लक्ष्यहीन हो जायेगा, और लक्ष्य पाने की वह चेतना, उत्तेजना जो उस के जीवन में जीवन के प्रति रस पैदा करती थी ख़त्म हो जायेगी, अब जीवन नीरस होगा यानी जीवन लक्ष्यहीन हो जायेगा।

जो लोग अपने जीवन में लक्ष्य नहीं पाते, और लक्ष्य पाने की आशा खो देते है फिर या तो एक बेजान सी जिंदगी जीते हैं या अपने आप को शराब वगैरह के हवाले कर देते हैं।

"मौत के बाद जीवन" पर विश्वास और अपने कर्मों का फल पाने का विश्वास जीवन के प्रति मानव की चेतना को कभी बुझने नहीं देता, ऐसे लोगों का मुख्य लक्ष्य सृष्टीकर्ता को प्रसन्न करना होता है, यह एक ऐसा लक्ष्य है जो जीवन में हमेशा नया रस भरता है, ऐसे आदमी का अगर इस जीवन में कोई लक्ष्य है, फिर वह उस लक्ष्य को अर्जित करे ना करे जीवन पर कोई असर नहीं पडता, उस का जीवन कभी लक्ष्यहीन नहीं होता ।

८. जीवन की समस्याओं से लडने की शक्ती

जीवन समस्याओं का दुसरा नाम है, इस संसार में कोई ऐसा नहीं जिसे कोई समस्या नहीं, जो लोग "मौत के बाद जीवन" पर विश्वास नहीं करते हैं उन के लिए जीवन की समस्याओं से सघंर्ष

करना कठिन होता है, मृत्यु के बाद कोई जीवन ही नहीं, यह एक ही जीवन है और उस एक जीवन में ये सारी समस्यायें हैं इस गणित को वह समझ ही नहीं पातें, समस्या आती है तो शिकायत पैदा होती है की मेरे ही साथ ऐसा क्यों ? लेकिन जो व्यक्ति "मरने के बाद जीवन" पर विश्वास करता है वह जानता है की समस्या चाहे कितनी ही बड़ी हो वह इस जीवन के साथ समाप्त हो जायेगी, और मुझे इस समस्या पर धैर्य रखने पर निर्माता के पास पुरस्कार मिलेगा, पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ः "एक मुसलमान पर जब कोई समस्या आती है तो वह उस के पापों का प्रायश्चित बन जाती है चाहे उसे एक कांटा ही क्यों ना चूभे"

ज़रा ग़ौर कीजिये, एक कांटा चूभने पर भी पुरस्कार, जितनी बड़ी समस्या उतना बड़ा पुरस्कार, लेकिन यह पुरस्कार मिलेगा कहां ? मृत्यु के बाद, इस जीवन का अंत है साथ में इस जीवन की समस्याओं का भी अंत है, लेकिन मृत्यु के बाद के जीवन का अंत

नहीं, अगर यह विश्वास किसी ह्यदय में दुढ़ हो गया तो जीवन की समस्याओं से सघंर्ष आसान हो जाता है और ऐसा मनुष्य इन समस्याओं से हार नहीं मानता।

९. जीवन के प्रति समाधान

इस संसार में हर एक का अपना एक जीवन है, किसी को निर्माता ने धन दौलत दी तो किसी को ग़रीबी, किसी को बुध्दी ज़्यादा दी तो किसी को कम, किसी को कोई गुण मिला है तो किसी को नहीं, अगर मरने के बाद जीवन नहीं है तो हर एक को एक दुसरे से शिकायत होगी, ग़रीब धनी को देख कर अपने जिवन के तुच्छ समझेगा और परेशानियों में घिरा धनी गरीब की बेफिक्री देख कर अफसोस करेगा, कम बुध्दी वाले बुध्दीवंत को देख कर अपने जीवन को तुच्छ समझेंगे, तात्पर्य यह की अल्लाह की इस तक़्सीम से हर किसी को शिकायत होगी, लेकिन अगर मृत्यु के बाद जीवन पर विश्वास हो तो वह उसे जैसा भी जीवन मिले उस जीवन से सहमत होगा, उसे यह विश्वास होगा की यह जीवन उस के हाथ में नहीं लेकिन यहां अगर उस ने अच्छे कर्म किये तो मरने के बाद उस का जीवन सुखी होगा, जीवन के प्रति यह समाधान उस मनुष्य को ईर्ष्या से बचाता है और जो व्यक्ति ईर्ष्या से बच

जाता है उस से किसी भी व्यक्ति को कोई ख़त्रा नहीं होता, चोरी, लूट-खसौट, आदि दुष्ट कार्य ईर्ष्या की ही देन है, "मृत्यु के बाद जीवन" पर **विश्वास** ऐसा समाधान है जो ईर्ष्या को समाप्त करता है।

१०. समाप्ती

"मृत्यु के बाद जीवन" पर **विश्वास** इंसान की आवश्यकता है, जो मनुष्य को अच्छा आदमी बनाता है, उस के जीवन को लक्ष्य देता है, उसे त्याग एवं बलिदान की चेतना देता है, जीवन की समस्याओं से लडने की शक्ती देता है, जीवन के प्रति उत्साह और आनंद पैदा करता है, अपने जीवन पर उसे समाधान देता है, उसे ईर्ष्या से बचाता है, इस पर अविश्वास इंसान को दुर्बल करता है, इस संसार में होने वाले आत्याचारों का इंसाफ कहां हो इस का कोई समाधान उस के पास नहीं होता, मनुष्य की भलाई इसी में है की वह "मृत्यु के बाद जीवन" पर **विश्वास** करे।

अपनी भाषा में पवित्र कुरआन की नि:शुल्क कॉपी को आर्डर करने के लिए अभी कॉल करें, यह भेंट सारे धर्म और जाति के लिए उपलब्ध है।

आर्डर के लिए आप को सिर्फ अपना

- ✔ **१. नाम**
- ✔ **२. मोबाइल नंबर**
- ✔ **३. घर का पोस्टल एड्रेस**
- ✔ **४. कुरआन की भाषा**

निचे दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल या एस एम् एस के द्वारा भेजना है और पवित्र कुरआन आपके घर तक नि:शुल्क पहुंचाया जायेगा।

अभी कॉल करें: